राष्ट्रीय सहारा 18-04-2017

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सेमिनार को संबोधित करते निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन। फोटो : एसएनबी

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर। चीनी मिले गन्ना पेराई के पश्चात निकलने वाले खोई में नमी की औसत मात्रा में कमी लाकर अतिरिक्त बिजली उत्पादित कर नियमित लाभ कमा सकती हैं। सामान्यतः खोई में 50 प्रतिशत तक नमी होती है। इस नमी के प्रतिशत को यदि 42 प्रतिशत तक ले आया जाय तो एक चीनी मिल 2000 किलोवाट तक अतिरिक्त बिजली बना उसे राष्ट्रीय ग्रिड को बेच सकती है। इस तकनीक से एक चीनी मिल को सत्र में करीब ₹ 3 करोड़ की अतिरिक्त आय हो सकती है।

हर चीनी मिल को एक पेराई सत्र में होगी 3 करोड़ की अतिरिक्त आय

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सोमवार को आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में देश भर से आये विषय विशेषज्ञों ने कहा चीनी मिलों को नियमित अतिरिक्त आय के लिए बगास में नमी में कमी लाने के तकनीक को अपनाना चाहिए। संस्थान के निदेशक डॉ.नरेन्द्र मोहन ने कहा बगास में नमी कम किये जाने से संबंधित संयंत्र की स्थापना पर करीब ₹ 5 करोड़ का खर्च आयेगा। उन्होंने चीनी उद्योग से जुड़े लोगों को उक्त तकनीक अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। डालमिया भारत इंडस्ट्रीज लिमिटेड (शुगर डिवीजन) के सलाहकार जेके गुप्ता ने पारंपरिक चीनी मिलों को रिफाइंड शुगर यूनिट में बदलने की आवश्यकता बतायी और कहा कि इस तरह का प्रयोग जरूरी है। कार्यशाला में केसीपी चेन्नई, जेपी एसोसिएट, पुणे व मे. इनवायरोपोल एवं डेटस से आये तकनीकी विशेषज्ञों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। मे. एनमिल,नोएडा से पधारे पीएस श्रीवास्तव ने नयी तकनीक के संभावनाओं की चर्चा की। संस्थान के आचार्य डॉ.स्वेन ने इस अवसर पर कहा कि चीनी मिलों में विद्युत उत्पादन बढ़ाकर न केवल विद्युत की कमी को पूरा किया जा सकता है। सहायक आचार्य डॉ. संतोष कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आज 18-04-2017

बिजली उत्पादन कर सालाना 3 करोड़ कमायेंगी चीनी मिलें

खोई में नमी प्रतिशत घटने से अतिरिक्त मुनाफा कमायेंगी चीनी मिलें

2000 मेगावाट तक बिजली उत्पादन कर राष्ट्रीय ग्रिड को बेच सकेंगी चीनी मिलें

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 17 अप्रैल। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर की ओर से कैंपस के सभागार में आयोजित एकराष्ट्रीय कार्यशाला में संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने विभित्र तकनीकी द्वारा खोई में नमी का प्रतिशत कम करने की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहाकि सामान्य रूप से खोई में 50 प्रतिशत नमी होती है। यदि उसको 42 प्रतिशत के स्तर तक लाया जाय तो चीनी मिलें लगभग 2000 मेगावाट अतिरिक्त बिजली का उत्पादन कर इसे राष्ट्रीय ग्रिड को बेच सकती है एवं चीनी मिलें अतिरिक्त मुनाफा कमा सकती हैं।

इस विधि द्वारा 5000 टी.सी.डी. की एक चीनी मिल लगभग 1.6 मेगावाट की दर से अधिक विद्युत का उत्पादन कर पेराई सत्र में 3 करोड़ प्रतिवर्ष की अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकेगी। इस तकनीकी को मिल में स्थापित करने की लागत 5 करोड़ आती है जो कि 2 पेराई सत्र में ही विद्युत निर्यात से वसूली हो जायेगी। डालमिया भारत इंडस्ट्रीज लि. (शुगर डिवीजन) के सलाहकार जे.के. गुप्ता ने बगास ड्राइंग की तकनीक के उपयोग पर जोर देते हुए बगास से विद्युत उत्पादन पर विस्तार से प्रकाश डाला। पारंपरिक चीनी मिलों को रिफाइंड शुगर यूनिट में बदलने की आवश्यकता का उल्लेख करते हुए बताया कि चीनी मिलों को सतत लाभ अर्जित करने वाली इकाइयों में परिवर्तन करने के लिए इस तकनीक का उपयोग जरूरी है। तकनीकी सत्र में के.सी.पी. चेन्नई ने अपने प्रेजेंटेशन में आरएलडी के बारे में विस्तार से बताया, जिसके द्वारा जूस के बगास में पुनः अवशोषण करने से नमी की मात्रा में 4 से 5 प्रतिशत तक कम की जा सकती है। विशेषज्ञों ने विकसित नमी नियंत्रण इकाई पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस विधि से मिलों में जूस निकालने वाली मशीनों में सिस्टम को लगाकर उ.प्र. महाराष्ट्र और बिहार की कई चीनी मिलों में बगास में नमी का प्रतिशत 5 से 6 प्रतिशत तक सफलतापूर्वक कम किया गया है। पी.एस. श्रीवास्तव, डा. स्वेन ने कार्यशाला पर अपने अनुभव व व्याख्यान पर चर्चा की। डा. स्वेन ने केन्या में स्थित चीनी मिलों को संस्थान द्वारा दिये गये तकनीकी परामर्श से भी अवगत कराया। कार्यशाला में देशभर से आये 75 तकनीक विदो एवं अभियंता शामिल हुए।

कार्यशाला को संबोधित करते शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन।

My City 18-04-2017

‘सूखे बगास से पैदा होगी अधिक बिजली’

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर।

एनएसआई में जानकारी देते विशेषज्ञ।

गन्ने की बगास (खोई) को सूखाकर बिजली उत्पादन के प्रयोग में लाने पर ज्यादा फायदा होगा। बगास में 50 प्रतिशत नमी होती है। इसे घटाकर अगर 42 प्रतिशत कर दिया जाए तो चीनी मिलें लगभग 2000 मेगावाट अतिरिक्त बिजली का उत्पादन कर इसे राष्ट्रीय ग्रिड को बेच सकती हैं। यह बातें सोमवार को नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर नरेंद्र मोहन ने बताई। वह इंस्टीट्यूट में 'बगास म्वाइश्चर रिडक्शन- टेक्नोलॉजीकल ऑप्शन' पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। इसमें विभिन्न भागों से आए 75 तकनीशियन और इंजीनियरों ने शिकरत की।

प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि इस विधि द्वारा 5000 टीसीडी की एक चीनी मिल लगभग 116 मेगावाट की दर से अधिक विद्युत का उत्पादन कर एक पेराई सत्र में तीन करोड़ प्रतिवर्ष की अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकेंगी। इस तकनीक को मिल में स्थापित करने की लागत लगभग पांच करोड़ आती है जो दो पेराई सत्र में ही विद्युत निर्यात से वसूल की जा सकती है। डालमिया भारत इंडस्ट्रीज लिमिटेड के सलाहकार जेके गुप्ता ने बगास ड्राइंग की तकनीक बताई। केसीपी जेपी मुखर्जी एसोसिएट्स पुणे के विशेषज्ञों ने नमी नियंत्रण इकाई पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. स्वेन, डॉ. संतोष कुमार आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान 18-04-2017

खोई में नमी घटाकर चीनी मिलें बिजली बना सकती हैं

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सोमवार को आयोजित सेमिनार में जानकारी देते वक्ता।

कानपुर | कार्यालय संवाददाता

विभिन्न तकनीकों से बगास (खोई) में नमी के प्रतिशत को कम करने की आवश्यकता है। खोई में 50 प्रतिशत नमी होती है। अगर इसे 42 प्रतिशत कर दिया जाए तो चीनी मिलें लगभग 2000 मेगावाट अतिरिक्त बिजली का उत्पादन कर सकती हैं। इस विधि से चीनी मिले तीन करोड़ रुपये की अतिरिक्त बिजली ग्रिड को बेच सकेंगे।

यह बात राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कही। सोमवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के सेमिनार हाल में बगास माइसचर रिडक्शन-टेक्नोलॉजी ऑप्शंस विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें उप्र समेत हरियाणा, मध्य प्रदेश, तमिलनाडू जैसे प्रदेशों से 75 तकनीकीविद आए। डालमिया भारत इंडस्ट्रीज लिमिटेड के सलाहकार जेके गुप्ता ने बताया कि परम्परागत चीनी मिलों को रिफाइंड शुगर यूनिट में बदलना जरूरी है।

चेन्नई से आए केसीपी ने बताया कि जूस के बगास में पुनः अवशोषण करने से नमी की मात्रा चार से पांच प्रतिशत कम हो जाती है। पुणे से आए जेपी मुखर्जी ने चीनी मिलों को नमी नियंत्रण इकाई विकसित करनी चाहिए। उप्र, महाराष्ट्र व बिहार की कई चीनी मिलों ने नमी की प्रतिशत पाच से छह प्रतिशत कम किया है। नोएडा से आए पीएस श्रीवास्तव ने बताया कि बगास में नमी के प्रतिशत को कम करने के लिए मिलों में कम लागत में भी तकनीकी का विकास किया जा रहा है। डॉ. स्वेन ने केन्या की चीनी मिलों के बारे में भी जानकारी दी।

iNext 18-04-2017

6 महीने में 15000 MW बिजली

PIC: DAINIK JAGRAN I NEXT

एनएसआई में सेमिनार के दौरान नई तकनीक के बारे में जानकारी देते एक्सपर्ट.

- 'बैगास ड्रायर टेक्नोलॉजी' का यूज कर ज्यादा बिजली उत्पादन कर सकेंगे
- एनएसआई में आयोजित नेशनल सेमिनार में दी गई जानकारी
- शुगर मिल से निकलने वाली गैसों का भी यूज होगा

kanpur@inext.co.in

KANPUR (17 April): शुगर इंडस्ट्री से निकलने वाली खोई(बैगास) के मॉश्चर को ड्रायर करके चीनी मिलें छह महीने में 15000 मेगावॉट बिजली बना सकती हैं. अभी बैगास का मॉश्चर कम न होने पर शुगर मिलें 10 हजार मेगावॉट बिजली बना रही हैं. यह बिजली 5 हजार टन गन्ना पेरने वाली मिलें बनाएंगी. बैगास ड्रायर टेक्नोलॉजी का यूज करके मिलें ज्यादा पावर जनरेट करके ग्रिड को सप्लाई दे सकेंगी. इस पावर सप्लाई से मिलों का प्रॉफिट बढ़ जाएगा. यह जानकारी नेशनल एनएसआई में आयोजित एक दिवसीय नेशनल सेमिनार में संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने दी.

टेक्नोलॉजी में 6 करोड़ का खर्च

शुगर मिलों में जो बैगास निकलता है, उसमें करीब 50 परसेंट मॉश्चर होता है. इस मॉश्चर वाले बैगास से डेली 5 हजार टन गन्ना पेरने वाली शुगर मिल 6 महीने में करीब 10 हजार मेगावॉट बिजली का उत्पादन करती हैं. अगर इस बैगास का मॉश्चर 40 से 42 परसेंट कर दिया जाए तो फिर इससे 15 हजार मेगावॉट बिजली का उत्पादन किया जा सकता है. इसके लिए शुगर मिलों को बैगास ड्रायर टेक्नोलॉजी का यूज करना होगा. इस टेक्नोलॉजी की लागत करीब 5 से 6 करोड़ रुपए के बीच में आएगी.

प्रदूषण नहीं करेंगी हार्मफुल गैसें

मुख्य स्पीकर पुणे से आए एमएस सुंदरम ने बताया कि बैगास ड्रायर टेक्नोलॉजी में शुगर मिल से निकलने वाली कार्बन डाई ऑक्साइड और कार्बन मोनो ऑक्साइड गैसों को चिमनी से सीधे बैगास ड्रायर में डाल देंगे, जिससे बैगास का मॉश्चर कम हो जाएगा. इस तकनीक से पर्यावरण संरक्षण भी होगा. घातक गैसें वायुमण्डल में नहीं जाएंगी. उन्होंने बताया कि शुगर मिल की चिमनी से करीब 15 परसेंट कार्बन डाई ऑक्साइड और 1 से 2 परसेंट कार्बन मोनो ऑक्साइड, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन गैसें निकलती हैं. यहां दिल्ली के राजेश वर्मा, प्रो संतोष कुमार, डॉ. सीमा परोहा मौजूद रहीं.

दैनिक जागरण 18-04-2017

बगास की नमी कम करने से बढ़ेगा बिजली उत्पादन

जागरण संवाददाता, कानपुर : गन्ने की खोई (बगास) की नमी कम करने से चीनी मिलें बिजली उत्पादन बढ़ा सकती हैं। ये नमी कम कैसे होगी? इसकी अलग-अलग तकनीक पर रविवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की कार्यशाला में जुटे देशभर से जुटे विषय विशेषज्ञों ने विचार मंथन किया।

एनएसआइ के सेमिनार हॉल में 'बगास मॉइश्चर रिडक्शन टेक्नोलॉजिकल ऑप्शन' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने अतिथियों के स्वागत के साथ तकनीकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विभिन्न तकनीकों द्वारा खोई में नमी के प्रतिशत को कम करने की महती आवश्यकता है। सामान्यतः खोई में 50 प्रतिशत नमी होती है। यदि उसको 42 प्रतिशत के स्तर तक लाया जाए तो चीनी मिलें लगभग 2000 मेगावाट अतिरिक्त बिजली का उत्पादन कर सकती हैं। इस विधि द्वारा 5000 टीसीडी की एक चीनी मिल लगभग 1.6 मेगावाट की दर से अधिक विद्युत का उत्पादन कर एक पेराई सत्र में 3.0 करोड़ प्रतिवर्ष की अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकेगी।

डालमिया भारत इंडस्ट्रीज लि. (शुगर डिवीजन) के सलाहकार जेके गुप्ता ने बगास ड्राइंग की तकनीक के उपयोग पर जोर दिया। पारंपरिक चीनी मिलों को रिफाइंड शुगर यूनिट में बदलने की आवश्यकता बताई। इससे सतत लाभ मिलेगा। तकनीकी सत्र में केसीपी चेन्नई, जेपी मुखर्जी एसोसिएट्स पुणे, मै. इनवायरोपोल एंड ब्रेट्स नई दिल्ली और मै. एनमिल नोएडा ने अपनी-अपनी तकनीक का प्रेजेंटेशन दिया।

संस्थान के आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, डॉ. स्वेन ने वर्तमान परिस्थितियों में विद्युत उत्पादन एवं बगास में नमी दूर करने के बाद विद्युत उत्पादन की क्षमता के बारे में रिपोर्ट पेश की। उन्होंने केन्या में स्थित चीनी मिलों को दिए जा रहे परामर्श के बारे में भी बताया।

The Pioneer 18-04-2017

Seminar on technological options for bagasse moisture reduction

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

The Director of the National Sugar Institute, Prof Narendra Mohan while addressing a seminar on 'Technological Options for bagasse moisture reduction' at the NSI auditorium on Monday emphasised upon the need of reducing the moisture content in bagasse. He said that normally bagasse contains around 50% moisture and by reducing it to 42%, the sugar mills can generate additional 2000 MW electricity for export to the National Grid by which they can earn more profit. By this method a sugar plant of 5000 TCD can produce additional 1.6 MW electricity and thus can earn an additional income of ₹. 3.0 crores per annum. The installation cost of this device is ₹ 5 crore, thus ROI (Return on investment) can be achieved within two years.

He said sugar mill wet bagasse was used as a fuel in sugar industry across the world. He said the moisture content on the bagasse was effort on the calorific value (CV) of bagasse and boiler efficiencies. He said industries and research institutes have been working to reduce the moisture content of mill wet bagasse. He said the average moisture content in the bagasse was 51.5 per cent He said after the installation of bagasse dryer around 45 per cent of wet bagasse was routed through the dryer. This he said typically the mill wet bagasse contained around 48 per cent to 52 per cent moisture with a gross calorific value (GCV) of around 2270 Kcal/kg (~9500 kj/kg). He said normally bagasse was directly fed to the boiler to generate steam and surplus bagasse was stored in the bagasse yard. He said the boiler installed in the plant were designed to burn bagasse with this moisture.

He said it was a known fact that GCV of bagasse was largely dependent upon its moisture content. He said the higher moisture content in bagasse reduced its GCV and also resulted in higer energy loss because the fuel moisture carried that latent heat of vaporisation up the stack.

Prof Mohan said it was understood that main goal of the bagasse drying action, according to the design was to get fuel gas temperature at 75 degree C minimum rather than any bagasse moisture content. He said the dryer operation were controlled through a control loop which regulated the quantityof bagasse fed to the dryer through rotary valve and gate of bagasse elevator. He said the quantityof fuel gas was controlled by regulating the RPM of dryer fan in order to keep the fuel gas temperature close to 75 degree C. He said the bagasse dryer can be put in and out of operation without disturbing the boiler and did not require any extra manpower for operation.

Discussing safety, he said utmost care was required to prevent jamming of dryer tube due to fly ash and bagasse. He added that though the process time in the dryer was only a few seconds, care should be taken to prevent fire in the dryer. He said the fire can be due to succession of events like there could be a bagasse jam at the dryer outlet and the process continuity was interrupted. .

JK. Gupta, Advisor, Dalmia Bharat Industries (Sugar Division) stressed the need for adoption of newer technologies for reducing the moisture content of bagasse and a subsequent use of this bagasse for the generation of electricity by co-generation. He said that this is essential for converting the conventional sugar units into sustainable profit earning refined sugar units. In the technical session M/s. KCP Ltd., Chennai detailed about the RLD (Re-absorption Limiting Device) technology being developed by them by which the moisture content in bagasse can be reduced by 4- 5% by re-absorption process. The Experts of JP Mukherjee Associates, Pune, discussed about their moisture control unit by which the moisture in bagasse can be reduced by 5-6% and such device has already been successfully installed in many sugar mills of UP, Maharashtra and Bihar.

M/s Enviropol & Dets, New Delhi gave presentation on their process of Bagasse Drying System in which the heat of flue gases from the chimney is utilised for the drying of the bagasse. This technology has been installed in many sugar units by which the moisture content in bagasse can be brought down to 42%. P.S. Srivastava from Enmill, Noida, also detailed about process of reducing the moisture content in bagasse. In his presentation M/s Xenon, Gujrat discussed about the flashing method by which considerable reduction in the moisture content of bagasse can be achieved.

Dr D. Swain, Prof. Sugar Engineering gave a bird's eye view about the generation of electricity by co-generation by using bagasse of reduced moisture content. He told the audience that in this manner not only electricity production can be increased at the same time sugar mills can also earn more profits. He also detailed about the technical advice given by the Institute to the sugar mill of Kenya.

Delagates from Maharashtra, Tamil Nadu, , Gujarat, UP , Haryana and MP were participating.